हाउसहोल्ड की मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं: क्या वे भारत में मजदूरी-कीमत गतिकी को प्रभावित करती हैं?

श्री सितिकांत पट्टनाइक, सिलु मुदलि तथा सौम्यजित राय द्वारा लिखित इस पर्चे में भारत में मुद्रास्फीति गतिकी का विश्लेषण करते हुए हाउसहोल्ड की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं पर सर्वेक्षण आधारित जानकारी की उपयोगिता की जांच की गई है। चूंकि हाउसहोल्ड की मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं तार्किकता और निष्पक्षता के सांख्यिकीय गुणों की पूर्ति नहीं करते, इसलिए यह जानने के लिए नए कीन्सियन फिलिप कर्व (एनकेकेपी) के मिश्रित संस्करण का इस्तेमाल किया गया है कि क्या भारत में मुद्रास्फिति का अनुमान लगाने के लिए प्रगतिशील प्रत्याशाओं को स्थानापन्न के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। हालांकि मुद्रास्फीति को समझाने और अनुमान लगाने के लिए 3 महीने पूर्व की और 1 वर्ष पूर्व की, दोनों ही हाउसहोल्ड प्रत्याशाएं सांख्यकीय रूप से महत्वपूर्ण होती हैं, किंतु यह देखते हुए कि हाउसहोल्ड प्रत्याशाएं अनुकुलनीय पाई गई हैं, प्रभावी रूप में वे बैकवर्ड लुकिंग प्रत्याशाओं के स्थानापन्न के रूप में काम करती हैं। जब मजदूरी गतिकी के माध्यम से मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं के मुद्रास्फीति में संचारण का आकलन किया गया, तब प्रत्याशा-जनित मजदूरी दबाव द्वारा सीपीआई मुद्रास्फीति को प्रभावित किए जाने के कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिले। खाद्य और ईंधन संबंधी अल्पकालिक आघात हाउसहोल्ड की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं में उतार-चढ़ाव को काफी हद तक स्पष्ट कर देते हैं। हाउसहोल्ड की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं के मजदूरी और कीमतों पर प्रसरण प्रभाव के प्रमाण सीमित होने के बावजूद मुद्रास्फीति के सातत्य का उच्च स्तर तथा मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं के प्रति खाद्य और ईंधन आघातों की संवेदनशीलता पाई गई है, जिसके कारण व्यवस्थित मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं पर मौद्रिक नीति में निरंतर बल दिया जाना आवश्यक है।